राष्ट्रीय हिन्दी/साप्ताहिक

हिन्दुस्तान एकता

वर्ष: 07 | अंक: 14 | पृष्ठ: 04 | मूल्य: ₹1.00

info@hindustanekta.com

कैथल, वीरवार 11 जून, 2026

RNI-HRHIN/26/A1127

सूर्यास्त 07:24 | सूर्योदय 05:24

तापमान

अधिकतम 43° | न्यूनतम 29°

आपकी आवाज हमारी ताकत

आप कोई सामाजिक, धार्मिक आयोजन, प्रेस कॉन्फ्रेंस या किसी संस्था से जुड़ी कोई खबर, खुला नाला है, पानी से भरा गड्ढा है, रोड टूटी या गड्ढे हैं, हादसे का खतरा है इत्यादि खबरें हमारे साथ साझा करना चाहते हैं तो अब दूर नहीं। आपको केवल खबर और खबर से जुड़े चुनिंदा दो फोटो कैप्शन के साथ भेजना होगा। आपकी खबर को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाएगा।

ऐसे भेजे

वॉट्सएप्प कर सकते हैं

9499422208

हमें QR स्कैन कर वेबसाइट पर भी भेज सकते हैं

जहां दुनिया देखती है मैच, वहां गितिका गढ़ती हैं इतिहास...

● असम की गितिका तालुकदार बनीं भारत की पहली महिला फीफा फोटो जर्नलिस्ट, तीसरी बार करेंगी विश्व कप कवरेज

हिन्दुस्तान एकता » चंडीगढ़

भारत भले ही अभी तक फीफा विश्व कप में खिलाड़ी के रूप में अपनी जगह नहीं बना पाया हो, लेकिन भारतीय प्रतिभाएं दुनिया के सबसे बड़े फुटबॉल मंच पर लगातार अपनी पहचान दर्ज करा रही हैं। इसी कड़ी में असम की गितिका तालुकदार ने एक और ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। वर्ष 2026 फीफा पुरुष विश्व कप के लिए उन्हें आधिकारिक मान्यता (एक्रिडिटेशन) मिली है और इसके साथ ही वह भारत की पहली महिला फोटो जर्नलिस्ट बन गई हैं, जिन्हें लगातार तीसरी बार फीफा विश्व कप कवर करने का अवसर मिला है।

गितिका इससे पहले रूस (2018) और कतर (2022) फीफा विश्व कप में भी अपनी कैमरे की नजर से दुनिया के सबसे बड़े फुटबॉल आयोजन के यादगार पल कैद कर चुकी हैं। 2026 का विश्व कप अमेरिका, कनाडा और मेक्सिको में आयोजित होगा, जहां वह अंतरराष्ट्रीय मीडिया टीम का हिस्सा रहेंगी।

खेल फोटोग्राफी की दुनिया में गितिका का सफर आसान नहीं रहा। अरुणाचल प्रदेश में जन्मी और असम से जुड़ी गितिका ने दक्षिण कोरिया के सियोल नेशनल यूनिवर्सिटी से ग्लोबल स्पोर्ट्स मैनेजमेंट की पढ़ाई की। उन्होंने खेल मीडिया में लैंगिक असमानता पर भी शोध किया। लगभग दो दशक के करियर में उन्होंने ओलंपिक, फीफा विश्व कप, फीफा महिला विश्व कप, आईपीएल, कॉमनवेल्थ गेम्स और आईसीसी टूर्नामेंट जैसे कई प्रतिष्ठित आयोजनों को कवर किया है।

खास बात यह है कि खेल फोटोग्राफी का क्षेत्र आज भी पुरुषों के वर्चस्व वाला माना जाता है। ऐसे में पूर्वोत्तर भारत से निकलकर वैश्विक मंच पर अपनी अलग पहचान बनाना गितिका की मेहनत और प्रतिभा का प्रमाण है। 2024 में उन्हें पेरिस ओलंपिक के लिए अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (IOC) ने सीधे मान्यता दी थी, जिससे वह यह सम्मान पाने वाली भारत की पहली और एकमात्र महिला फोटोग्राफर बनीं।

उनकी तस्वीरें केवल खेल नहीं, बल्कि खिलाड़ियों की भावनाएं, संघर्ष, जीत का उत्साह और हार का दर्द भी बयां करती हैं। यही वजह है कि आज गितिका तालुकदार भारतीय खेल पत्रकारिता की नई प्रेरणा बन चुकी हैं।

कौन हैं गितिका तालुकदार

- **जन्म:** अरुणाचल प्रदेश
- **मूल पहचान:** असम की खेल फोटो जर्नलिस्ट
- **शिक्षा:** सियोल नेशनल यूनिवर्सिटी, दक्षिण कोरिया
- **विशेष उपलब्धि:** भारत की पहली महिला फीफा फोटो जर्नलिस्ट
- **फीफा विश्व कप कवरेज:** 2018 (रूस), 2022 (कतर), 2026 (अमेरिका-कनाडा-मेक्सिको)
- **ओलंपिक कवरेज:** टोक्यो 2020, पेरिस 2024
- **अन्य प्रमुख आयोजन:** फीफा महिला विश्व कप, आईपीएल, कॉमनवेल्थ गेम्स, आईसीसी टूर्नामेंट
- **अनुभव:** लगभग 20 वर्ष
- **विशेषता:** खेलों के भावनात्मक और मानवीय पहलुओं को कैमरे में कैद करना

न्यूज ब्रीफ

मानस-1933 पर दें नशा तस्करी की गुप्त सूचना: डीसी

कैथल » डीसी अपराजिता ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई राष्ट्रीय नारकोटिक्स हेल्पलाइन मानस-1933 नशामुक्त भारत के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। यह हेल्पलाइन 24 घंटे संचालित रहती है, जिस पर नागरिक ड्रग्स तस्करी से संबंधित गुप्त जानकारी साझा कर सकते हैं। सूचना देने वाले की पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी। डीसी ने बताया कि नशा व्यक्ति, परिवार और समाज तीनों के लिए घातक है। मानस-1933 के माध्यम से नशा तस्करों पर कार्रवाई के साथ-साथ नशे की लत से जूझ रहे लोगों को काउंसलिंग और पुनर्वास की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि यह हेल्पलाइन देशभर की एंटी-नारकोटिक्स टास्क फोर्स से जुड़ी है, जिससे तस्करों के खिलाफ त्वरित कार्रवाई संभव हो सकेगी। डीसी ने आमजन से वर्ष 2047 तक नशामुक्त भारत के संकल्प को सफल बनाने में सक्रिय सहयोग देने का आह्वान किया।

1 क्लिक, मोबाइल हैक!

● ट्रैफिक चालान के नाम पर भेजी जा रही है फर्जी एपीके फाइल

● साइबर पुलिस ने किया अलर्ट

कलासो देवी » कैथल

साइबर अपराधियों ने लोगों को ठगने का नया तरीका अपनाया है। जिला पुलिस अधीक्षक मनप्रीत सिंह सूदन ने बताया कि ठग खुद को आरटीओ अधिकारी बताकर व्हाट्सएप पर ट्रैफिक चालान के नाम से एपीके (APK) फाइल भेज रहे हैं। जैसे ही कोई व्यक्ति इस फाइल को डाउनलोड कर खोलता है, उसका मोबाइल फोन हैक हो जाता है। इसके बाद साइबर ठग बैंकिंग डिटेल्स, ओटीपी और अन्य निजी जानकारियों तक पहुंच बनाकर आर्थिक नुकसान पहुंचाते हैं।

एसपी ने बताया कि मोबाइल हैक होने के बाद ठग पीड़ित के व्हाट्सएप ग्रुपों में भी वही फाइल भेज देते हैं, ताकि अधिक लोगों को अपना शिकार बना सकें। उन्होंने कहा कि पुलिस ऐसे मामलों पर लगातार नजर रखे हुए है, लेकिन साइबर अपराध से बचाव के लिए आमजन की सतर्कता सबसे जरूरी है। एसपी ने नागरिकों से अपील की कि किसी भी अनजान लिंक या एपीके फाइल को डाउनलोड न करें और चालान संबंधी जानकारी केवल अधिकृत सरकारी पोर्टल या एम-परिवहन तथा ई-चालान ऐप पर ही जांचें।

साइबर अलर्ट... इन बातों का रखें ध्यान

- किसी भी अनजान APK फाइल या लिंक को डाउनलोड न करें।
- व्हाट्सएप पर आए ट्रैफिक चालान संदेशों पर तुरंत भरोसा न करें।
- चालान की जानकारी केवल सरकारी वेबसाइट या अधिकृत ऐप पर ही जांचें।
- गलती से फाइल डाउनलोड हो जाए तो तुरंत इंटरनेट बंद करें और ऐप डिलीट करें।
- संदिग्ध कॉल, मैसेज या लिंक की सूचना तुरंत साइबर हेल्पलाइन 1930 या नजदीकी साइबर थाना को दें।

सतर्कता ही सबसे बड़ा बचाव....

एसपी मनप्रीत सिंह सूदन ने कहा कि जागरूकता और सावधानी अपनाकर ही साइबर ठगी से स्वयं और अपने परिवार को सुरक्षित रखा जा सकता है।

सीपीए जोन-II सम्मेलन में लोकतंत्र...

तकनीक-सामाजिक समरसता पर हुई चर्चा

चंडीगढ़ » हरियाणा विधानसभा द्वारा आयोजित राष्ट्रमंडल संसदीय संघ (सीपीए) इंडिया रीजन के जोन-II सम्मेलन के तकनीकी सत्र में विभिन्न राज्यों के पीठासीन अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों ने विकसित भारत-2047 के लक्ष्य पर विचार-विमर्श किया। विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए देश विकास में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। मध्य प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र तोमर ने सम्मेलन को विकसित भारत के विजन के लिए मील का पत्थर बताया। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने सामाजिक समरसता, पर्यावरण और तकनीक को विकास का आधार बताया, जबकि जम्मू-कश्मीर विधानसभा अध्यक्ष अब्दुल रहीम राथर ने युवाओं को शोध और आधुनिक तकनीक से जुड़ने का संदेश दिया।

कथादेश लघुकथा प्रतियोगिता-18 के परिणाम घोषित

पूजा अग्निहोत्री और संदीप तोमर ने बढ़ाया हिंदुस्तान एकता का मान

हिन्दुस्तान एकता » नई दिल्ली

कथादेश पत्रिका और लघुकथा डॉट कॉम के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय कथादेश लघुकथा प्रतियोगिता-18 के परिणाम घोषित कर दिए गए हैं। देशभर के रचनाकारों की सहभागिता वाली इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में अक्षत यादव की लघुकथा को प्रथम पुरस्कार के लिए चयनित किया गया है। वहीं महावीर राजी को द्वितीय पुरस्कार तथा रचना श्रीवास्तव को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

प्रतियोगिता में हिंदुस्तान एकता से जुड़ी नियमित लेखिका पूजा अग्निहोत्री

की रचना को भी उत्कृष्ट स्थान प्राप्त हुआ है। उनकी लघुकथा को चौथे स्थान पर पुरस्कृत किया गया है, जिससे साहित्यिक जगत में उनकी सशक्त उपस्थिति एक बार फिर प्रमाणित हुई है। इसके अलावा हिंदुस्तान एकता के लेखक संदीप तोमर की लघुकथा का भी इस अखिल भारतीय प्रतियोगिता में चयन हुआ है। यह उपलब्धि उनके निरंतर साहित्यिक योगदान और रचनात्मक प्रतिबद्धता का परिचायक है। उल्लेखनीय है कि संदीप तोमर को इससे पूर्व वर्ष 2025 में प्रतिष्ठित 'राजेंद्र यादव हंस लघुकथा सम्मान' से भी सम्मानित किया जा चुका है। उनकी रचनाएं सामाजिक सरोकारों और मानवीय संवेदनाओं को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए जानी जाती हैं। हिंदुस्तान एकता परिवार ने प्रतियोगिता में सम्मानित एवं चयनित सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित की हैं तथा उनके उज्ज्वल साहित्यिक भविष्य की कामना की है। यह उपलब्धि न केवल संबंधित रचनाकारों के लिए, बल्कि समकालीन हिंदी लघुकथा साहित्य के लिए भी गौरव का विषय है।

अवैध कॉलोनियों पर सख्ती, नियम तोड़ने वालों पर होगी कार्रवाई: डीसी

कैथल » डीसी अपराजिता ने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि जिले में अवैध कॉलोनियों और अनधिकृत निर्माण गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखी जाए तथा नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। जिला टास्क फोर्स कमेटी की बैठक में उन्होंने कहा कि नई अवैध कॉलोनियों या निर्माण गतिविधियों की सूचना मिलते ही तुरंत कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। बैठक में डीटीपी प्रवीन कुमार ने बताया कि जनवरी 2025 से अप्रैल 2026 तक जिले में 52 अवैध कॉलोनियां चिन्हित की गईं, जिनमें से 45 पर डिमोलिशन कार्रवाई की जा चुकी है। साथ ही 41 मामलों में एफआईआर दर्ज की गई है। अवैध निर्माण रोकने के लिए इस माह छह विशेष अभियान भी चलाए जाएंगे।

सुए से हमले के मामले में 4 आरोपी गिरफ्तार

● डिफेंस कॉलोनी के पास हुई वारदात, पुलिस ने कार्रवाई कर दबोचे आरोपी

हिन्दुस्तान एकता » कैथल

थाना सिविल लाइन क्षेत्र में करनाल रोड स्थित डिफेंस कॉलोनी के पास सुए और अन्य हथियारों से हमला करने के मामले में पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान पाडला निवासी बंटी तथा कैथल निवासी कृष्ण, साहिल और हर्षु के रूप में हुई है। एसएचओ इंस्पेक्टर रमेश चंद्र ने बताया कि 6 जून की रात फौजी टेंट हाउस के संचालक अनूप के भाई प्रवीन कुमार और उसके साथी सोहन लाल की जूस की रेहड़ी पर एक व्यक्ति से कहासुनी हो गई थी। इसके बाद आरोपी अपने साथियों को बुलाकर मौके पर पहुंचे और सुए, ईंटों व धारदार हथियारों से हमला कर दिया। हमले में अनूप, प्रवीन और सोहन लाल गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की सूचना डायल-112 पर दी गई। पुलिस के पहुंचने से पहले आरोपी फरार हो गए थे। मामले में केस दर्ज कर सीआईए-1 और थाना सिविल लाइन पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई कर चारों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने कहा कि कानून व्यवस्था बिगाड़ने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।

15 जून से 14 जुलाई तक बीएलओ घर-घर पहुंचकर करेंगे मतदाताओं का सत्यापन

एसआईआर से मतदाता सूची होगी अधिक पारदर्शी: एडीसी

हिन्दुस्तान एकता » कैथल

पूंडरी विधानसभा क्षेत्र के निर्वाचक पंजीयन अधिकारी एवं एडीसी सुशील कुमार ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा चलाया जा रहा विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर)-2026 अभियान मतदाता सूचियों को अधिक शुद्ध, पारदर्शी और विश्वसनीय बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। इस अभियान के तहत मृत मतदाताओं के नाम हटाने, दोहरी प्रविष्टियों को समाप्त करने, स्थानांतरित मतदाताओं का रिकॉर्ड अपडेट करने तथा नए पात्र नागरिकों के नाम सूची में शामिल किए जाएंगे।

सोमवार को पत्रकारों से बातचीत करते हुए एडीसी ने बताया कि पूंडरी विधानसभा क्षेत्र में कुल 184 मतदान केंद्र हैं और यहां 1 लाख 94 हजार 11 मतदाता पंजीकृत हैं। इनमें से 1 लाख 57 हजार 227 मतदाताओं की मैपिंग का कार्य पूरा किया जा चुका है, जबकि शेष सत्यापन कार्य जारी है। उन्होंने बताया कि 14 जून तक बीएलओ को प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके बाद 15 जून से 14 जुलाई तक बीएलओ घर-घर जाकर मतदाताओं को प्रपत्र उपलब्ध कराएंगे। सभी मतदाताओं से दो पासपोर्ट साइज फोटो साथ रखने की अपील की गई है।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व: कैथल के 51 बुजुर्ग श्रद्धालु सोमनाथ दर्शन के लिए रवाना

कलासो देवी » कैथल

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के तहत कैथल जिले के 51 बुजुर्ग श्रद्धालु सोमवार को गुजरात स्थित श्री सोमनाथ मंदिर के दर्शन के लिए रवाना हुए। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कुरुक्षेत्र से विशेष रेलगाड़ी को हरी झंडी दिखाकर यात्रा का शुभारंभ किया। इस ट्रेन में प्रदेश के विभिन्न जिलों के वरिष्ठ नागरिक शामिल हैं। डीसी अपराजिता ने बताया कि श्री सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में यह विशेष यात्रा आयोजित की जा रही है। यात्रा का पूरा खर्च हरियाणा सरकार द्वारा वहन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा योजना के तहत वरिष्ठ नागरिकों को देश के प्रमुख धार्मिक स्थलों के दर्शन कराए जा रहे हैं।

इससे पहले श्रद्धालुओं को अयोध्या, प्रयागराज महाकुंभ, नांदेड़ साहिब सहित कई प्रमुख तीर्थ स्थलों की यात्रा करवाई जा चुकी है। योजना के तहत 60 वर्ष या उससे अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों को लाभ दिया जाता है, जबकि 1.80 लाख रुपये तक वार्षिक आय वाले परिवारों को प्राथमिकता दी जाती है।

सुविचार

"ईमानदारी वह रास्ता है, जो हमेशा सम्मान तक पहुँचाता है।"

संपादकीय

युवाओं का मानसिक स्वास्थ्य: एक अनदेखा संकट

आज का युवा वर्ग देश की सबसे बड़ी शक्ति माना जाता है। वही राष्ट्र के भविष्य का निर्माता है और समाज को नई दिशा देने की क्षमता रखता है। लेकिन आधुनिक जीवन की तेज रफ्तार, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और सामाजिक दबावों के बीच युवाओं का मानसिक स्वास्थ्य एक गंभीर चिंता का विषय बनता जा रहा है। दुर्भाग्य से, इस समस्या को अक्सर पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता, जिसके कारण यह एक अनदेखे संकट का रूप ले चुकी है।

वर्तमान समय में युवाओं पर शिक्षा, करियर और सामाजिक अपेक्षाओं का अत्यधिक दबाव है। अच्छे अंक प्राप्त करने, प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश पाने और सफल करियर बनाने की होड़ ने उनके जीवन में तनाव को बढ़ा दिया है। इसके अतिरिक्त, बेरोजगारी और भविष्य को लेकर अनिश्चितता भी मानसिक चिंता का कारण बनती है। कई युवा अपनी समस्याओं को साझा नहीं कर पाते और धीरे-धीरे अवसाद, चिंता तथा आत्मविश्वास की कमी जैसी समस्याओं का सामना करने लगते हैं।

सोशल मीडिया ने भी युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाला है। यद्यपि यह संवाद और जानकारी का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, लेकिन इसके अत्यधिक उपयोग से तुलना की प्रवृत्ति बढ़ती है। युवा अक्सर दूसरों के जीवन की चमक-दमक देखकर स्वयं को कमतर समझने लगते हैं। लाइक, फॉलोअर्स और ऑनलाइन स्वीकृति की चाह मानसिक तनाव को बढ़ाती है। साइबर बुलिंग और ऑनलाइन उत्पीड़न जैसी समस्याएं भी युवाओं के मनोबल को प्रभावित करती हैं।

मानसिक स्वास्थ्य के प्रति समाज में जागरूकता की कमी भी एक बड़ी चुनौती है। आज भी कई लोग मानसिक समस्याओं को कमजोरी या व्यक्तिगत असफलता के रूप में देखते हैं। इस कारण अनेक युवा सहायता लेने से हिचकिचाते हैं। समय पर परामर्श और उपचार न मिलने से स्थिति और गंभीर हो सकती है। कुछ मामलों में यह आत्महत्या जैसे दुखद परिणामों तक पहुँच जाती है, जो समाज के लिए अत्यंत चिंताजनक है।

इस समस्या के समाधान के लिए परिवार, शैक्षणिक संस्थानों और सरकार को मिलकर कार्य करना होगा। परिवारों को युवाओं के साथ खुला संवाद स्थापित करना चाहिए और उनकी भावनाओं को समझने का प्रयास करना चाहिए। विद्यालयों और महाविद्यालयों में परामर्श सेवाओं तथा मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। साथ ही, सरकार को मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और पहुंच सुनिश्चित करनी चाहिए, ताकि प्रत्येक युवा आवश्यक सहायता प्राप्त कर सके।

अंततः, मानसिक स्वास्थ्य शारीरिक स्वास्थ्य जितना ही महत्वपूर्ण है। स्वस्थ मन के बिना स्वस्थ समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। युवाओं का मानसिक स्वास्थ्य केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय विकास का भी विषय है। इसलिए इस अनदेखे संकट को पहचानना, इसके प्रति संवेदनशील होना और समय रहते प्रभावी कदम उठाना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। तभी हम एक सशक्त, आत्मविश्वासी और स्वस्थ युवा पीढ़ी का निर्माण कर सकेंगे।

अखबार से मोबाइल जर्नलिज्म तक का सफर है सुहाना...

अनिल कुमार यादव
(सहायक प्राध्यापक खेल विश्वविद्यालय हरियाणा, राई)

एक समय था जब समाचारों का प्रमुख स्रोत अख़बार हुआ करते थे। सुबह की चाय के साथ अख़बार पढ़ना लोगों की दिनचर्या का महत्वपूर्ण हिस्सा था। समाचारों को एकत्रित करने, संपादित करने और पाठकों तक पहुँचाने की प्रक्रिया लंबी और मेहनत वाली होती थी। लेकिन सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास ने पत्रकारिता की दुनिया को पूरी तरह बदल दिया है। आज हम मोबाइल जर्नलिज्म अर्थात मोजो के युग में प्रवेश कर चुके हैं, जहाँ एक स्मार्टफोन ही रिपोर्टर का कैमरा, रिकॉर्डर, संपादन कक्ष और प्रसारण केंद्र बन गया है। पत्रकारिता का यह सफर वास्तव में बेहद रोचक और परिवर्तनकारी रहा है। पहले समाचारों को घटनास्थल से कार्यालय तक पहुँचने में कई घंटे या कभी-कभी दिन लग जाते थे। अखबारों की छपाई और वितरण के बाद ही जनता को जानकारी मिल पाती थी। इसके बाद रेडियो और टेलीविजन ने समाचारों की गति को बढ़ाया। फिर इंटरनेट और सोशल मीडिया के आगमन ने सूचना के प्रवाह को और अधिक तेज़ बना दिया।

आज मोबाइल जर्नलिज्म ने पत्रकारिता की परिभाषा ही बदल दी है। अब किसी भी घटना की तस्वीर, वीडियो या लाइव रिपोर्टिंग कुछ ही सेकंड में दुनिया के सामने लाई जा सकती है। एक पत्रकार अपने मोबाइल फोन से वीडियो शूट कर सकता है, उसे संपादित कर सकता है और तुरंत विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर प्रकाशित कर सकता है। यही कारण है कि मोजो को पत्रकारिता का भविष्य माना जा रहा है।

मोबाइल जर्नलिज्म की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सरलता, सुलभता और त्वरितता है। प्राकृतिक आपदाओं, चुनावों, खेल प्रतियोगिताओं या किसी आकस्मिक घटना के दौरान मोबाइल पत्रकारिता अत्यंत प्रभावी सिद्ध होती है। कम संसाधनों में भी गुणवत्तापूर्ण रिपोर्टिंग संभव हो गई है। इसके कारण स्वतंत्र पत्रकारों और नागरिक पत्रकारिता को भी नया बल मिला है। हालांकि इस परिवर्तन के साथ कई चुनौतियां भी सामने आई हैं। *(यह लेखक के निजी विचार है)*

हिंदुस्तान एकता कार्यालय

प्रिय पाठकगण,

यदि आप हिन्दुस्तान एकता में अपनी कोई रचना, लेख, कविता, कहानी, ग़ज़ल, समीक्षा, संस्मरण, जीवनी, बाल स्तंभ व महिला स्तंभ आदि प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो हर महीने की 2, 9, 16, 23 तारीख तक इस ईमेल पर भेजें तथा देश के हर कोने तक अपनी आवाज को बुलंद करें।

ईमेल:
hindustanektaliterature@gmail.com

सात हजार करोड़ की चाय का निर्यात, वैश्विक बाजार में भारत का उत्थान...

आशिस पोद्दार
पत्रकार

एक कप चाय केवल एक पेय नहीं है, बल्कि यह भारतीय अर्थव्यवस्था और संस्कृति का भी एक अभिन्न हिस्सा है। और यही चाय आज वैश्विक बाजार में भारत की एक शक्तिशाली पहचान बनकर उभर रही है। साल 2024 में भारत ने विदेशों में लगभग 254.67 मिलियन किलोग्राम चाय का निर्यात किया है, जिसका कुल मूल्य 7,111 करोड़ रुपये से भी अधिक रहा है। इसके परिणामस्वरूप, विश्व के प्रमुख चाय निर्यातक देशों की सूची में भारत तीसरे स्थान पर आ गया है।

वर्तमान में भारत सालाना लगभग 1.28 से 1.3 बिलियन किलोग्राम चाय का उत्पादन करता है, जो उत्पादन के लिहाज से दुनिया में दूसरे नंबर पर है। पहले स्थान पर चीन का कब्जा है। हालांकि, निर्यात के मामले में केन्या अभी भी दुनिया का शीर्ष देश माना जाता है। भारत, श्रीलंका और चीन भी बड़े चाय निर्यातक देशों में शामिल हैं।

भारतीय चाय के प्रमुख बाजार रूस, इराक, ईरान, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), ब्रिटेन और अमेरिका हैं। विशेष रूप से असम और दार्जिलिंग की चाय की अंतरराष्ट्रीय मांग लंबे समय से काफी अधिक रही है। भारत की 'सीटीसी चाय' (CTC Tea) मुख्य रूप से मिस्र और ब्रिटेन में लोकप्रिय है, जबकि दूसरी ओर 'ऑर्थोडॉक्स चाय' (Orthodox Tea) का निर्यात रूस, ईरान और पश्चिमी एशिया के विभिन्न देशों में किया जाता है।

चाय उद्योग के इतिहास में भारत की यात्रा ब्रिटिश काल में शुरू हुई थी। उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में चीन के एकाधिकार वाले चाय व्यवसाय का मुकाबला करने के लिए ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में चाय की खेती शुरू की। 1830 के दशक में असम में पहला वाणिज्यिक चाय बागान स्थापित हुआ। बाद में दार्जिलिंग, डुआर्स, तराई और दक्षिण भारत के नीलगिरि क्षेत्रों में भी चाय की खेती का तेजी से विस्तार हुआ। धीरे-धीरे भारतीय चाय ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी एक अलग पहचान बना ली।

दार्जिलिंग चाय आज दुनिया की बेहतरीन 'प्रीमियम टी' के रूप में मान्यता प्राप्त है। अपनी अनूठी सुगंध, स्वाद और भौगोलिक विशेषताओं के कारण इस चाय को 'चाय का शैंपेन' (Champagne of Tea) भी कहा जाता है। आमतौर पर इसके उत्कृष्ट स्वाद और अतुलनीय सुगंध के कारण भारत की दार्जिलिंग चाय को यह उपाधि दी गई है। दूसरी ओर, असम की कड़क और गहरे स्वाद वाली चाय यूरोप और मध्य पूर्व में बेहद लोकप्रिय है। पश्चिम बंगाल के डुआर्स क्षेत्र की चाय भी वैश्विक बाजार में एक उल्लेखनीय स्थान रखती है। हालांकि, इस उद्योग के सामने चुनौतियां भी कम नहीं हैं। जलवायु परिवर्तन, अत्यधिक बारिश, हीटवेव (लू) और श्रमिकों के संकट के कारण पिछले साल भारत के चाय उत्पादन में थोड़ी गिरावट आई है। विशेष रूप से असम में उत्पादन को बड़ा झटका लगा है। हालांकि, उत्पादन घटने के कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय चाय की कीमतें बढ़ी हैं, जिससे निर्यात से होने वाली आय में वृद्धि दर्ज की गई है।

विशेषज्ञों के अनुसार, दुनिया भर में स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण ग्रीन टी, ऑर्गेनिक टी और विशेष प्रकार की चाय (स्पेशलिटी टी) का बाजार तेजी से बढ़ रहा है। यदि इस अवसर का सही लाभ उठाया जाए, तो भारतीय चाय उद्योग आने वाले समय में एक और बड़ी आर्थिक ताकत बन सकता है। विशेष रूप से 'मेक इन इंडिया' और कृषि-आधारित निर्यात पर जोर दिए जाने से अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय चाय की स्थिति और भी मजबूत होने की संभावनाएं पैदा हुई हैं।

(यह लेखक के निजी विचार है)

स्वाधीनता संग्राम में अमर नाम है राम प्रसाद बिस्मिल का

महेन्द्र तिवारी, भूतपूर्व वायुसैनिक, संप्रति राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली में कार्यरत

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में वैचारिक चेतना और सशस्त्र क्रांति का एक ऐसा अनूठा संगम देखने को मिलता है जिसने दमनकारी ब्रिटिश सत्ता की नींव हिलाकर रख दी थी। इस अद्वितीय संगम के सबसे प्रखर प्रतीक पुरुष थे अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल। वे केवल एक निर्भीक सेनानी ही नहीं थे बल्कि एक संवेदनशील कवि, लेखक, अनुवादक और बहुभाषाविद भी थे। उनकी कलम से निकले शब्द जहाँ युवाओं के भीतर देशभक्ति की ज्वाला धधका देते थे, वहीं उनके हाथों में थमी पिस्तौल विदेशी शासकों के मन में भय का संचार करती थी। कलम और पिस्तौल का ऐसा अद्भुत संतुलन इतिहास में विरला ही देखने को मिलता है। उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति हंसते-हंसते दे दी और आने वाली पीढ़ियों के लिए राष्ट्रवाद का एक ऐसा अनुपम आदर्श स्थापित किया जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

इस महान क्रांतिकारी का जन्म 11 जून 1897 को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर नामक नगर में हुआ था। उनके पिता मुरलीधर एक साधारण और स्वाभिमानी व्यक्ति थे जबकि उनकी माता मूलमती धार्मिक और दृढ़ संकल्प वाली महिला थीं। बिस्मिल के व्यक्तित्व के निर्माण में उनकी माता का प्रभाव सबसे गहरा था जिन्होंने उन्हें सदा सत्य और देशप्रेम के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। बचपन में उनकी शिक्षा-दीक्षा स्थानीय स्तर पर हुई जहाँ उन्होंने हिंदी, उर्दू और संस्कृत भाषाओं का गहन अध्ययन किया। वे उर्दू में बिस्मिल उपनाम से कविताएँ लिखते थे जबकि हिंदी में राम और अज्ञात के नाम से उनकी रचनाएँ प्रकाशित होती थीं। किशोरावस्था में स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों और आर्य समाज के सिद्धांतों ने उनके जीवन को एक नई दिशा दी जिससे उनके भीतर अनुशासन और राष्ट्र सेवा का संकल्प और अधिक सुदृढ़ हो गया।

देश की पराधीनता और देशवासियों पर होने वाले अत्याचारों ने उन्हें सक्रिय क्रांति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए विवश कर दिया। वर्ष 1918 में उन्होंने मैनपुरी षड्यंत्र के माध्यम से ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी जहाँ उन्होंने युवाओं का एक दल बनाकर देशभक्ति साहित्य का वितरण किया। इसके बाद वे स्वतंत्रता आंदोलन को एक अधिक संगठित और राष्ट्रव्यापी रूप देने के प्रयास में जुट गए। इसी उद्देश्य से उन्होंने अन्य क्रांतिकारियों के साथ मिलकर हिंदुस्तान गणतंत्र संघ नामक एक शक्तिशाली क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की। इस संगठन का मुख्य लक्ष्य भारत को पूर्ण स्वतंत्रता दिलाना और एक लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना करना था। बिस्मिल इस संगठन के मुख्य रणनीतिकार और सेनापति थे। उनके नेतृत्व में चंद्रशेखर आज़ाद और अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ जैसे महान क्रांतिकारियों ने अपनी देशभक्ति का पाठ सीखा।

क्रांतिकारी गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने और अस्त्र-शस्त्र खरीदने के लिए धन की अत्यधिक आवश्यकता थी। विदेशी सरकार से धन मांगना असंभव था और देश की गरीब जनता को लूटना क्रांतिकारियों के सिद्धांतों के विरुद्ध था। इसलिए बिस्मिल ने अंग्रेजी सरकार का खजाना लूटने की एक अत्यंत साहसिक योजना बनाई। 9 अगस्त 1925 को उनके कुशल नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने लखनऊ के समीप काकोरी नामक स्थान पर सहारनपुर से लखनऊ जा रही एक यात्री रेलगाड़ी को रोककर सरकारी खजाने को अपने नियंत्रण में ले लिया। इस ऐतिहासिक घटना को काकोरी कांड के नाम से जाना जाता है। इस घटना ने ब्रिटिश साम्राज्य को भीतर तक झकझोर दिया और सरकार ने क्रांतिकारियों को पकड़ने के लिए अपनी पूरी शक्ति झोंक दी। व्यापक धरपकड़ के बाद बिस्मिल सहित कई प्रमुख क्रांतिकारियों को बंदी बना लिया गया।

कारागार की चारदीवारों के भीतर भी बिस्मिल का हौसला तनिक भी कम नहीं हुआ। उन्होंने बंदीगृह को ही अपनी साधना स्थली बना लिया और वहाँ रहते हुए प्रचुर मात्रा में उत्कृष्ट साहित्य की रचना की। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध आत्मकथा वहीं लिखी जो आज भी भारतीय क्रांतिकारी साहित्य का एक अनमोल रत्न मानी जाती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने कई विदेशी क्रांतिकारी ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद किया और अनेक प्रेरणादायक गीतों की रचना की। कारागार में रहते हुए उन्होंने अपने देशवासियों और विशेष रूप से युवाओं के नाम कई संदेश भेजे जिसमें उन्होंने सांप्रदायिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता बनाए रखने पर बल दिया। उनके विचार अत्यंत दूरदर्शी थे जो केवल अंग्रेजों को भगाने तक सीमित नहीं थे बल्कि वे एक शोषणमुक्त समाज का निर्माण करना चाहते थे।

ब्रिटिश अदालत ने काकोरी घटना का मुख्य सूत्रधार मानते हुए राम प्रसाद बिस्मिल को मृत्युदंड की सजा सुनाई। 19 दिसंबर 1927 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर कारागार में उन्हें फांसी के फंदे पर लटका दिया गया। फांसी के चबूतरे की ओर बढ़ते हुए उनके चेहरे पर कोई भय नहीं था बल्कि एक अलौकिक तेज था। उन्होंने हंसते हुए फंदे को चूमा और अपनी मातृभूमि की वंदना करते हुए प्राण त्याग दिए। उनकी अंतिम इच्छा यही थी कि वे बार-बार भारत भूमि पर जन्म लें और तब तक देश की सेवा करते रहें जब तक कि वह पूरी तरह से स्वतंत्र न हो जाए। उनका यह सर्वोच्च बलिदान व्यर्थ नहीं गया और इसने पूरे देश में क्रांति की एक ऐसी लहर पैदा कर दी जिसने अंततः 15 अगस्त 1947 को भारत को औपनिवेशिक दासता से मुक्ति दिलाई।

राम प्रसाद बिस्मिल का जीवन और उनका कृतित्व इस बात का साक्षात प्रमाण है कि एक सच्चा देशभक्त केवल अस्त्रों से ही नहीं बल्कि अपने विचारों और नैतिक मूल्यों से भी लड़ता है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करना चाहिए। आज भले ही वे हमारे बीच भौतिक रूप से उपस्थित नहीं हैं लेकिन उनकी कविताएँ, उनके विचार और उनका अदम्य साहस हर भारतीय के हृदय में सदैव जीवित रहेगा। राष्ट्र निर्माण और देश की संप्रभुता की रक्षा के लिए उनका जीवन सदैव एक मार्गदर्शक प्रकाश स्तंभ की भांति हमें प्रेरणा देता रहेगा।

(यह लेखक के निजी विचार है)

जब मौत बन जाए सोशल मीडिया का कंटेंट

डॉ. सत्यवान सौरभ
कवि, सामाजिक विचारक एवं स्तंभकार, आकाशवाणी एवं टीवी पेनालिस्ट

हाल के दिनों में एक मासूम बच्चे की निर्मम हत्या और हांसी में एक दुकानदार की दर्दनाक हत्या से जुड़े वीडियो सोशल मीडिया पर धड़ल्ले से पोस्ट और शेयर किए जा रहे हैं। इन वीडियो की एक झलक मात्र ही किसी भी संवेदनशील व्यक्ति की रूह कंपा देने के लिए पर्याप्त है। पूरे वीडियो को देखने की हिम्मत बहुत कम लोग जुटा पा रहे हैं। जो भी इन्हें देख रहा है, वह उनकी भयावहता और अमानवीयता से विचलित हो रहा है। ऐसे वीडियो में न कोई संदेश है, न कोई सकारात्मक उद्देश्य, बल्कि केवल पीड़ा, भय और मानसिक असहजता है। इसलिए यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या सोशल मीडिया पर ऐसी सामग्री का खुलेआम प्रसार उचित है और क्या प्लेटफॉर्म्स को इसे तुरंत हटाने की जिम्मेदारी नहीं निभानी चाहिए?

डिजिटल युग में सूचना का आदान-प्रदान पहले की तुलना में कहीं अधिक तेज हो गया है। कोई भी घटना कुछ ही मिनटों में लाखों लोगों तक पहुँच जाती है। यह तकनीक का सकारात्मक पक्ष है, क्योंकि इससे लोगों को त्वरित जानकारी मिलती है। लेकिन जब इसी तकनीक का उपयोग किसी की हत्या, दुर्घटना या व्यक्तिगत त्रासदी के भयावह दृश्यों को फैलाने के लिए होने लगे, तब यह चिंता का विषय बन जाता है। सूचना और सनसनी के बीच एक स्पष्ट अंतर होता है। किसी घटना की जानकारी देना आवश्यक हो सकता है, लेकिन उस घटना के वीभत्स दृश्यों को बार-बार प्रसारित करना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता। जब किसी बच्चे की हत्या होती है या किसी व्यक्ति को बेरहमी से मार दिया जाता है, तब वह केवल एक खबर नहीं होती। उसके पीछे एक परिवार का दर्द, असंख्य टूटे हुए सपने और जीवनभर का दुःख छिपा होता है। ऐसे वीडियो वायरल होने पर पीड़ित परिवारों की पीड़ा और बढ़ जाती है। वे लोग जो पहले से ही अपनों को खोने के सदमे में होते हैं, उन्हें बार-बार वही दृश्य सोशल मीडिया पर देखने पड़ते हैं। यह उनके लिए मानसिक यातना से कम नहीं है। किसी भी सभ्य समाज में मृतक और उसके परिवार की गरिमा का सम्मान किया जाना चाहिए, लेकिन वायरल संस्कृति ने कई बार इस संवेदनशीलता को पीछे छोड़ दिया है।

सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के साथ रवायरलर होने की होड़ भी बढ़ी है। अधिक लाइक, व्यूज़, शेयर और फॉलोअर्स पाने की चाह में कई लोग बिना किसी नैतिक विचार के ऐसी सामग्री साझा कर देते हैं। कई बार लोग यह कहकर वीडियो पोस्ट करते हैं कि वे सच्चाई दिखा रहे हैं, जबकि वास्तविकता यह होती है कि वे अनजाने या जानबूझकर एक दर्दनाक घटना को डिजिटल तमाशे में बदल रहे होते हैं। किसी की मृत्यु या पीड़ा को लोकप्रियता प्राप्त करने का माध्यम बनाना न केवल असंवेदनशीलता का परिचायक है, बल्कि सामाजिक मूल्यों के क्षरण का भी संकेत है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी ऐसे वीडियो बेहद हानिकारक होते हैं। हिंसक और रक्तरंजित दृश्य देखने से लोगों में तनाव, भय, चिंता और मानसिक बेचैनी बढ़ सकती है। कई संवेदनशील व्यक्तियों को लंबे समय तक ऐसे दृश्य परेशान करते रहते हैं। बच्चों और किशोरों पर इसका प्रभाव और भी गंभीर हो सकता है। वे या तो अत्यधिक भयभीत हो सकते हैं या फिर हिंसा को सामान्य व्यवहार के रूप में स्वीकार करने लगते हैं। इंटरनेट की खुली दुनिया में यह सुनिश्चित करना लगभग असंभव है कि ऐसे वीडियो केवल वयस्कों तक ही सीमित रहें। इसलिए इनका अनियंत्रित प्रसार समाज के मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी खतरा है।

एक और गंभीर समस्या यह है कि लगातार हिंसक सामग्री देखने से लोगों में संवेदनहीनता बढ़ने लगती है। जो दृश्य पहले मन को झकझोर देते थे, वे धीरे-धीरे सामान्य लगने लगते हैं। बार-बार हत्या, दुर्घटना और रक्तपात के दृश्य देखने से मनुष्य के भीतर करुणा और सहानुभूति की भावना कमजोर पड़ सकती है। यह किसी भी समाज के लिए शुभ संकेत नहीं है। एक स्वस्थ समाज की पहचान उसकी संवेदनशीलता होती है। यदि लोग दूसरों के दुःख को महसूस करना छोड़ दें, तो सामाजिक संबंधों और मानवीय मूल्यों की नींव कमजोर होने लगती है।

यहाँ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स की जिम्मेदारी भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स, यूट्यूब और अन्य डिजिटल मंचों के पास आधुनिक तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के ऐसे साधन उपलब्ध हैं, जिनकी मदद से हिंसक सामग्री की पहचान की जा सकती है। फिर भी अनेक भयावह वीडियो घंटों और कभी-कभी दिनों तक प्लेटफॉर्म पर बने रहते हैं और लाखों लोगों तक पहुँच जाते हैं। यह स्थिति स्वीकार्य नहीं है। जिन वीडियो में हत्या, गंभीर हिंसा या बच्चों के विरुद्ध अपराध के दृश्य हों, उन्हें तत्काल हटाया जाना चाहिए। साथ ही ऐसे कंटेंट को अपलोड और प्रसारित करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई भी होनी चाहिए।

मीडिया की भूमिका भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है। पत्रकारिता का उद्देश्य केवल दर्शकों का ध्यान आकर्षित करना नहीं, बल्कि जिम्मेदार तरीके से सूचना देना भी है। वर्षों से पत्रकारिता में कुछ नैतिक मानदंड स्थापित रहे हैं, जिनके तहत मृतकों की गरिमा, पीड़ितों की निजता और दर्शकों की मानसिक सुरक्षा का ध्यान रखा जाता है। डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया पर भी इन्हीं मूल्यों का पालन आवश्यक है। किसी घटना के बारे में जानकारी दी जा सकती है, लेकिन उसकी भयावहता को बार-बार प्रदर्शित करना पत्रकारिता नहीं, बल्कि सनसनीखेज प्रस्तुति कहलाएगी। हालाँकि केवल प्लेटफॉर्म्स और मीडिया को दोष देना पर्याप्त नहीं है। दर्शकों और सामान्य नागरिकों की भी जिम्मेदारी है। किसी भी हिंसक वीडियो को देखने या प्राप्त करने के बाद उसे आगे साझा करना आवश्यक नहीं होता। यदि लोग ऐसे वीडियो को रिपोर्ट करें, उन्हें आगे न बढ़ाएँ और दूसरों को भी ऐसा न करने के लिए प्रेरित करें, तो इनके प्रसार को काफी हद तक रोका जा सकता है। डिजिटल नागरिकता का अर्थ केवल इंटरनेट का उपयोग करना नहीं, बल्कि उसका जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग करना भी है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम तकनीक का उपयोग मानवता को मजबूत करने के लिए करें, न कि पीड़ा को तमाशे में बदलने के लिए। किसी दुखद घटना पर हमारी पहली प्रतिक्रिया संवेदना, सहानुभूति और न्याय की मांग होनी चाहिए, न कि भयावह वीडियो को आगे भेजने की।

(यह लेखक के निजी विचार है)

ना वो खुश, ना ये खुश, शादी के पिंजरे में कैद दो पंछी

आर.जे. रेखा
क्रिस्टल वॉयस
आकाशवाणी एफएम गोल्ड 100.1

शादी को अक्सर जीवन का सबसे खूबसूरत रिश्ता माना जाता है, लेकिन आज के समय में यह रिश्ता कई बार उम्मीदों के बोझ तले दबता दिखाई देता है। तलाक, पारिवारिक विवाद और रिश्तों में बढ़ती खामोशी के पीछे हमेशा किसी एक व्यक्ति की गलती नहीं होती। अधिकांश मामलों में पति, पत्नी और परिवार के अन्य सदस्य अपनी-अपनी जगह सही भी होते हैं और गलत भी। यही वजह है कि समस्या का समाधान आसान नहीं होता।

आधुनिक जीवन में पति-पत्नी दोनों पर जिम्मेदारियों का दबाव बढ़ा है। एक ओर नौकरी, करियर और आर्थिक स्थिरता की चिंता है, तो दूसरी ओर भावनात्मक जुड़ाव की अपेक्षा। कई बार पति परिवार की आर्थिक जरूरतें पूरी करने में इतना व्यस्त हो जाता है कि पत्नी को समय नहीं दे पाता। वहीं पत्नी को लगता है कि रिश्ते में संवाद और साथ की कमी है। दोनों अपनी-अपनी जगह उचित होते हैं, लेकिन दूरी बढ़ती जाती है।

कई परिवारों में पत्नी के त्याग को महत्व नहीं दिया जाता, जबकि कई जगह पति के संघर्ष को नजरअंदाज कर दिया जाता है। जब किसी एक के प्रयास को स्वाभाविक मान लिया जाता है और उसकी सराहना नहीं होती, तब रिश्तों में कड़वाहट जन्म लेने लगती है। सम्मान और आभार की कमी धीरे-धीरे प्रेम को कमजोर कर देती है।

भारतीय परिवारों में सास-बहू के संबंध भी कई बार तनाव का कारण बनते हैं। कभी सास का अत्यधिक हस्तक्षेप समस्या बनता है, तो कभी नई पीढ़ी अनुभव और परंपराओं को पूरी तरह नजरअंदाज कर देती है। दोनों पक्ष यदि एक-दूसरे को समझने का प्रयास करें तो अधिकांश विवाद स्वतः समाप्त हो सकते हैं।

आज आत्मनिर्भरता को लेकर जागरूकता बढ़ी है, जो सकारात्मक बदलाव है। लेकिन आत्मनिर्भरता का अर्थ संवेदनहीनता नहीं होना चाहिए। घर केवल अधिकारों से नहीं चलता, बल्कि जिम्मेदारियों से भी चलता है। चाहे पति हो, पत्नी हो या परिवार का कोई अन्य सदस्य, सभी को रिश्तों के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभानी पड़ती है।

हर रिश्ते में समझौता कमजोरी नहीं बल्कि परिपक्वता की निशानी है। यदि पति पत्नी की भावनाओं को समझे, पत्नी पति के संघर्ष का सम्मान करे और परिवार के बड़े सदस्यों को भी उचित सम्मान मिले, तो अधिकांश समस्याओं का समाधान संभव है। रिश्ते जीतने की नहीं, निभाने की चीज होते हैं।

शादी दो परिपूर्ण लोगों का नहीं, बल्कि दो अपूर्ण व्यक्तियों का साथ निभाने का निर्णय है। यदि हर व्यक्ति केवल अपनी बात को सही मानने लगे तो रिश्ते टूटने लगते हैं। लेकिन यदि सभी थोड़ा-थोड़ा झुकना और एक-दूसरे को समझना सीख लें, तो परिवार में प्रेम, सम्मान और विश्वास बना रह सकता है। आखिर घर बहस से नहीं, बल्कि आपसी समझ और संवेदनशीलता से बसते हैं।

(यह लेखिका के निजी विचार है)

न्यूज ब्रीफ

रेखा गुप्ता बोलीं- पीएम मोदी ने बिना छुट्टी लिए देश की सेवा की

नई दिल्ली » मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने नरेन्द्र मोदी के निर्वाचित प्रधानमंत्री के रूप में सबसे लंबा कार्यकाल पूरा करने के अवसर पर बुधवार को उत्तरी दिल्ली की किशनगंज गौशाला का दौरा किया और एक मंदिर में पूजा-अर्चना की। गुप्ता ने संवाददाताओं से कहा कि आज वह (मोदी) सबसे लंबे समय तक पद रहने वाले निर्वाचित प्रधानमंत्री बन गए हैं और वह बिना एक भी दिन की छुट्टी लिए, देश की सेवा कर रहे हैं। गुप्ता ने कहा कि करोड़ों लोग प्रधानमंत्री मोदी के लिए आशीर्वाद मांग रहे हैं, जिन्होंने अपना जीवन देश की सेवा में समर्पित कर दिया है।

अपाचे पर हमले का अमेरिका ने लिया बदला, ईरान के एयर डिफेंस को किया तबाह!

नई दिल्ली » 9 जून की रात जब पूरी दुनिया सो रही थी, तभी खाड़ी के देशों में आसमान आग उगल रहा था। अमेरिकी राष्ट्रपति के एक आदेश ने मिडिल ईस्ट की पूरी तस्वीर बदल कर रख दी। अमेरिका ने सीधे ईरान के सैन्य ठिकानों पर सर्जिकल स्ट्राइक की है और यह हमला इतना सटीक और इतना घातक था कि ईरान के एयर डिफेंस सिस्टम ताश की पत्तों की तरह ढह गए। लेकिन आखिर अमेरिका ने यह कदम क्यों उठाया? दरअसल अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने आधिकारिक तौर पर पुष्टि की कि उनकी सेनाओं ने ईरान के खिलाफ सेल्फ डिफेंस स्ट्राइक पूरी कर ली है। यह कोई मामूली झड़प नहीं थी।

दिल्ली के मालवीय नगर के होटल में लगी आग का मामला...

लाइसेंसिंग व निगरानी में बड़ी लापरवाही, 21 मौतों के बाद जांच के घेरे में सरकारी एजेंसियां

एजेंसी » नई दिल्ली

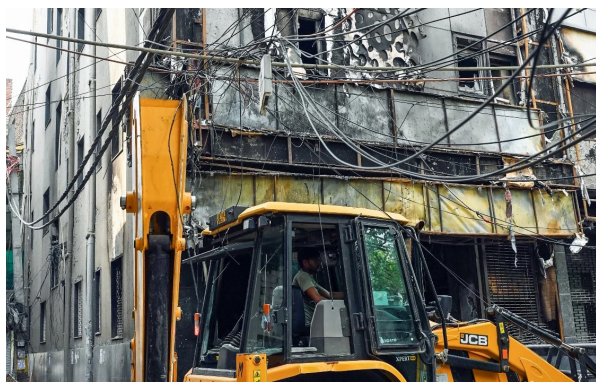

राजधानी दिल्ली के पॉश इलाके मालवीय नगर में स्थित एक गेस्ट हाउस में लगी भीषण आग, जिसमें 21 बेकसूर लोगों की दर्दनाक मौत हो गई थी, की जांच अब एक बेहद गंभीर मोड़ पर पहुंच गई है। शुरुआती दौर में जहां सारा ध्यान होटल के मालिकों और ग्राउंड स्टाफ की लापरवाही पर था, वहीं अब इस मामले की सुई दिल्ली की लाइसेंसिंग और रेगुलेटरी (नियमन) व्यवस्था में फैली गहरी खामियों की ओर घूम गई है।

तमाम नई जानकारियों ने दिल्ली प्रशासन के सामने एक बड़ा और तीखा सवाल खड़ा कर दिया है: जब सुरक्षा मानकों और कागजी दस्तावेजों की बुनियादी शर्तों का सरेआम उल्लंघन हो रहा था, तो इस मौत के कुएं को कमर्शियल ऑपरेशन की इजाजत किसने और कैसे दी? 3 जून को 'फ्लोरिश स्टे B&B' में लगी आग हाल के वर्षों में राजधानी में होटल में लगी सबसे खतरनाक आग की घटनाओं में से एक थी। जांचकर्ताओं के अनुसार, होटल के अकाउंटेंट जय मिश्रा ने पुलिस को बताया कि मालिक लवकेश बजाज के कहने पर उन्होंने बेड-एंड-ब्रेकफास्ट लाइसेंस लेने के लिए अपने पर्सनल डॉक्यूमेंट्स दिए थे। बताया जाता है कि उन्होंने कहा कि एप्लीकेशन प्रोसेस खुद मालिक ने ही संभाला था। उन्हें कथित तौर पर लगभग 35,000 रुपये की मासिक सैलरी मिलती थी। अब सवाल यह उठता है कि किसी कर्मचारी के नाम पर लाइसेंस कैसे मंजूर किया जा सकता था, जबकि प्रॉपर्टी और बिज़नेस कथित तौर पर किसी और के कंट्रोल में थे।

अधिकारी अब यह देख रहे हैं कि लाइसेंस देने से पहले ठीक से वेरिफिकेशन किया गया था या नहीं। नई जानकारियों ने ऐसे संस्थानों को मंजूरी देने और उनकी निगरानी करने वाली अथॉरिटीज़ पर भी ध्यान खींचा है। अधिकारी यह जांच कर रहे हैं कि क्या मंजूरी की प्रक्रिया में कोई गड़बड़ी थी और क्या ज़रूरी जांच को नज़रअंदाज़ किया गया था। अगर ओनरशिप की जानकारी, ऑपरेशनल कंट्रोल और डॉक्यूमेंटेशन मेल नहीं खाते थे, तो सवाल उठ रहे हैं कि इन कमियों को पहले क्यों नहीं पकड़ा गया। जांच में यह भी देखा जाएगा कि क्या समय-समय पर इंस्पेक्शन और नियमों के पालन की जांच की गई थी या नहीं। पुलिस को पता चला है कि मिश्रा सिर्फ़ अकाउंट्स ही नहीं संभाल रहे थे, बल्कि होटल के रोज़मर्रा के कामकाज में भी गहराई से शामिल थे। जांचकर्ताओं का कहना है कि वह स्टाफ की देखरेख करते थे, गेस्ट रिकॉर्ड्स मैनेज करते थे, एडमिनिस्ट्रेटिव काम देखते थे और लाइसेंस से जुड़े डॉक्यूमेंटेशन का काम संभालते थे। उन पर सुरक्षा ज़रूरतों के पालन की निगरानी करने और संस्थान के कामकाज से जुड़े ज़रूरी रिकॉर्ड्स बनाए रखने की ज़िम्मेदारी भी थी।

यूपी की 3 तलाक और एसिड अटैक पीड़ितों के लिए योगी सरकार का बड़ा फैसला

नई दिल्ली » मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार आधी आबादी की सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन के लिए एक अभूतपूर्व कल्याणकारी खाका तैयार कर रही है। राज्य सरकार ने समाज की सबसे ज़रूरतमंद और पीड़ित महिलाओं—जिनमें तीन तलाक से प्रभावित, एसिड अटैक की शिकार और बेसहारा या परित्यक्त महिलाएं शामिल हैं—को मुख्यधारा में लाने के लिए एक विशेष योजना को अमलीजामा पहनाना शुरू कर दिया है। इस संवेदनशील पहल के तहत पात्र पीड़ित महिलाओं को न केवल सुरक्षित छत (आवास) मुहैया कराई जाएगी, बल्कि उनके संपूर्ण इलाज और स्वास्थ्य सुरक्षा की जिम्मेदारी भी सरकार उठाएगी। आधिकारिक योजनाओं के अनुसार, पात्र महिलाओं को 'प्रधानमंत्री आवास योजना' और 'मुख्यमंत्री आवास योजना' जैसी प्रमुख आवास योजनाओं में शामिल किया जाएगा।

आईएमडी का लेटेस्ट मानसून अपडेट

उत्तर भारत को आंधी और बारिश से मिली बड़ी राहत

एजेंसी » नई दिल्ली

उत्तर और मध्य भारत में पिछले कई दिनों से जारी भीषण और जानलेवा लू के बीच मौसम ने आखिरकार करवट बदल ली है। मंगलवार रात को दिल्ली-एनसीआर के आसमान में अचानक बिजली कड़कने और धूल भरी तेज आंधी के बाद मौसम सुहावना हो गया। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने अब दिल्ली-एनसीआर और आसपास के मैदानी इलाकों के लिए राहत भरा पूर्वानुमान जारी किया है। मौसम विभाग के अनुसार, (बुधवार) दिनभर दिल्ली और उसके पड़ोसी शहरों (नोएडा, गाजियाबाद, गुरुग्राम और फरीदाबाद) में आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे। दोपहर या शाम के समय एक बार फिर तेज आंधी-तूफान आने और गरज-चमक के साथ बिजली कड़कने की प्रबल संभावना है। राजधानी में अधिकतम तापमान 43.5 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की उम्मीद है, जो पिछले दिनों के 45-46 डिग्री के मुकाबले थोड़ा कम है। मंगलवार शाम को आए तूफान के दौरान पालम मौसम केंद्र में हवा की सबसे तेज रफ्तार 111 किमी प्रति घंटा दर्ज की गई, जबकि पूसा ऑब्जर्वेटरी ने हवा की अधिकतम गति 48 किमी प्रति घंटा मापी।

बारामूला में बड़ा हादसा...

उरी सेक्टर में ग्रेनेड फटने से सेना के दो जवान शहीद

एजेंसी » नई दिल्ली

जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले से एक बेहद दुखद खबर सामने आई है। जिले के उरी सेक्टर में मंगलवार को उपकरणों के रख-रखाव के दौरान दुर्घटनावश एक हैंड ग्रेनेड फट गया। इस दर्दनाक हादसे में भारतीय सेना के दो जवान शहीद हो गए हैं। आधिकारिक सूत्रों ने इस घटना की पुष्टि की है। सैन्य अधिकारियों से मिली जानकारी के मुताबिक, यह हादसा उरी सेक्टर के कमलकोट स्थित सेना के एक शिविर में हुआ। शिविर में सैन्य उपकरणों और हथियारों के नियमित हस्तांतरण का काम चल रहा था। इसी दौरान एक हैंड ग्रेनेड अचानक और गलती से डिफ्यूज होने के बजाय फट गया। विस्फोट की चपेट में आने से ड्यूटी पर तैनात दो जवान गंभीर रूप से घायल हो गए। धमाके के तुरंत बाद शिविर में अफरा-तफरी मच गई। साथी जवानों और अधिकारियों ने बिना वक्त गंवाए दोनों घायल जवानों को तुरंत वहां से निकाला और सेना के 92 बेस अस्पताल ले गए। हालांकि, चोटें इतनी गंभीर थीं कि अस्पताल पहुंचने पर डॉक्टरों ने दोनों जवानों को मृत (शहीद) घोषित कर दिया। आधिकारिक कार्रवाई: सैन्य और स्थानीय पुलिस अधिकारियों के अनुसार, इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के संबंध में कानून के तहत आवश्यक कानूनी और जांच प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। हादसे के सही कारणों का पता लगाने के लिए आंतरिक जांच भी की जा रही है।

सिंधिया बोले- पीएम मोदी ने 12 साल में बदली देश की तस्वीर

नई दिल्ली » केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने मंगलवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार के 12 वर्ष में न केवल विकास के नए मानक स्थापित हुए हैं बल्कि करोड़ों गरीबों, किसानों, युवाओं और महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव भी सुनिश्चित हुआ है। सिंधिया ने यहां राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार के 12 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित 'विकसित भारत संकल्प सम्मेलन' को संबोधित करते हुए कहा, ''मोदी सरकार ने न केवल विकास के नए मानक स्थापित किए हैं, बल्कि करोड़ों गरीबों, किसानों, युवाओं और महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव भी सुनिश्चित किया है।

पीओके में भुखमरी, भारत में ज़ोजिला टनल का जश्न, दो कश्मीर की बदलती हकीकत

एजेंसी » नई दिल्ली

लाइन ऑफ कंट्रोल (एलओसी) के दोनों ओर पिछले 24 घंटों में जो तस्वीरें सामने आई हैं, वे 1947 में एक ही भूभाग से अलग हुए दो हिस्सों की बिल्कुल विपरीत हकीकत बयां करती हैं। एक तरफ जहां पाकिस्तान के अवैध कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) के शहर हिंसा, दमन और विरोध की आग में झुलस रहे हैं, वहीं महज 100 किलोमीटर दूर भारतीय हिस्से में विकास, आधुनिक इंजीनियरिंग और आर्थिक समृद्धि का जश्न मनाया जा रहा है। इसके पूरा होने पर यह एशिया की सबसे लंबी दोनों तरफ़ से चलने वाली टनल बन जाएगी। हर मौसम में खुली रहने वाली ज़ोजिला टनल जेएंडके को लद्दाख से जोड़ेगी। यह तुलना महज दो अलग घटनाओं की नहीं है, बल्कि दो अलग शासन व्यवस्थाओं और उनके इरादों की कहानी है। मंगलवार, 9 जून को पीओके के रावलकोट, मुज़फ़्फ़राबाद और मीरपुर जैसे प्रमुख शहर भारी अशांति और तनाव के गवाह बने। प्रतिबंधित 'जॉइंट अवामी एक्शन कमेटी' द्वारा बुलाए गए 'लॉन्ग मार्च' को कुचलने के लिए पाकिस्तानी प्रशासन ने कड़े कदम उठाए हैं।

रावलकोट में हुई हिंसक झड़पों में सरकारी आंकड़ों के मुताबिक 11 लोगों की मौत हुई है, जबकि स्थानीय कार्यकर्ताओं के अनुसार यह संख्या कहीं ज्यादा है। पूरे इलाके में इंटरनेट सेवाएं पूरी तरह ठप कर दी गई हैं, सैकड़ों प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया गया है और सड़कों पर भारी सुरक्षा बल तैनात है। 2024 में आटे-बिजली की आसमान छूती कीमतों के खिलाफ हिंसक प्रदर्शन हुए। आंसू गैस के गोले छोड़े गए और गोलियां चलीं, जिसमें 4 कश्मीरियों की जान गई। प्रदर्शनों में पहली बार पाकिस्तान से आज़ादी के नारे खुलेआम गूंजे।

टीएमसी की सुष्मिता देव ने राज्यसभा सांसद पद से दिया इस्तीफा

नई दिल्ली » पश्चिम बंगाल की सत्ताधारी पार्टी ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस के भीतर मची अंदरूनी कलह और बगावत अब दिल्ली के सियासी गलियारों तक पहुंच गई है। टीएमसी प्रमुख और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की पार्टी पर पकड़ लगातार कमजोर होती दिख रही है। पश्चिम बंगाल विधानसभा में बागी नेता रिताब्रता बनर्जी के समर्थन में 61 विधायकों के लामबंद होने के बाद, अब यह असंतोष संसद के उच्च सदन में भी फूट पड़ा है। पार्टी के बेहद भरोसेमंद और वरिष्ठ सहयोगी सुखेंदु शेखर रॉय के राज्यसभा से इस्तीफा देने के ठीक एक हफ्ते बाद, बुधवार को टीएमसी की तेजतर्रार नेता सुष्मिता देव ने भी उच्च सदन की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है।

हिन्दुस्तान एकता राष्ट्रीय हिन्दी/साप्ताहिक — स्पोर्ट्स — hindustanekta.com

स्पोर्ट्स ब्रीफ

अलेक्जेंडर ज्वेरेव का सालों का इंतजार खत्म जीता पहला ग्रैंड स्लैम

नई दिल्ली » फ्रेंच ओपन 2026 में जर्मनी के स्टार टेनिस खिलाड़ी अलेक्जेंडर ज्वेरेव का वर्षों इंतजार आखिरकार खत्म हुआ। कई बार करीब पहुंचकर भी ग्रैंड स्लैम खिताब से चूकने वाले ज्वेरेव ने आखिरकार अपने करियर का पहला ग्रैंड स्लैम एकल खिताब जीत लिया। फ्रांस की राजधानी पेरिस में खेले गए फाइनल मुकाबले में ज्वेरेव ने इटली के फ्लावियो कोबोली को हराकर यह ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। इस जीत के साथ उन्होंने वर्षों से चले आ रहे उस इंतजार को समाप्त कर दिया है, जो उनके करियर पर एक अधूरी कहानी की तरह छाया हुआ था।

बास्केटबॉल मैच देखने पहुंचे ट्रंप, तालियों से नहीं हूटिंग से हुआ स्वागत

नई दिल्ली » न्यूयॉर्क में खेले गए पेशेवर बास्केटबॉल चैम्पियनशिप के तीसरे मुकाबले के दौरान एक ऐसा दृश्य देखने को मिला, जिसने खेल के साथ-साथ राजनीति की भी चर्चा छेड़ दी है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप इस मुकाबले को देखने पहुंचे, लेकिन मैदान में मौजूद दर्शकों के एक बड़े वर्ग ने उनका स्वागत तालियों से नहीं बल्कि हूटिंग के साथ किया है। बता दें कि डोनाल्ड ट्रंप किसी भी पेशेवर बास्केटबॉल चैम्पियनशिप मुकाबले में पहुंचने वाले पहले मौजूदा अमेरिकी राष्ट्रपति बन गए हैं।

फीफा विश्व कप 2026

यूरोप की 16 टीमों के बीच मुकाबला फ्रांस-स्पेन में कौन बनेगा चैंपियन

एजेंसी » नई दिल्ली

फुटबॉल विश्व कप 2026 का रोमांच अब अपने चरम पर पहुंच रहा है और दुनिया भर के प्रशंसकों की नजरें यूरोप की उन टीमों पर टिकी हैं, जिन्होंने इस खेल के सबसे बड़े मंच पर हमेशा अपनी मजबूत मौजूदगी दर्ज कराई है। गौरतलब है कि अर्जेंटीना, ब्राजील और उरुग्वे को छोड़ दें तो विश्व कप का खिताब जीतने वाली सभी अन्य टीमें यूरोप से ही रही हैं। यही कारण है कि इस बार भी यूरोपीय देशों को टूर्नामेंट के सबसे बड़े दावेदारों में गिना जा रहा है। इस बार यूरोप से 16 टीमें विश्व कप में हिस्सा ले रही हैं। इनमें इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, पुर्तगाल, नीदरलैंड, क्रोएशिया और बेल्जियम जैसी मजबूत टीमें शामिल हैं। वहीं ऑस्ट्रिया, बोस्निया और हर्जेगोविना, नॉर्वे, स्कॉटलैंड और तुर्किये जैसी टीमें भी लंबे समय बाद अपनी छाप छोड़ने की कोशिश करेंगी।

मौजूद जानकारी के अनुसार सबसे ज्यादा उम्मीदें फ्रांस और स्पेन से लगाई जा रही हैं। फ्रांस की टीम के पास लगभग हर स्थान पर विश्व स्तरीय खिलाड़ी मौजूद हैं। किलियन एम्बाप्पे की अगुवाई में फ्रांस तीसरी बार विश्व चैंपियन बनने का सपना देख रहा है। उस्मान डेम्बेले और डिज़िरे दूए जैसे खिलाड़ी टीम की ताकत को और बढ़ाते हैं। खास बात यह है कि मुख्य प्रशिक्षक दिदिए देसां इस प्रतियोगिता के बाद पद छोड़ देंगे, इसलिए वह अपने कार्यकाल का अंत खिताब के साथ करना चाहेंगे।

दूसरी ओर विश्व की नंबर एक टीम स्पेन भी खिताब की प्रबल दावेदार मानी जा रही है। युवा स्टार लामिन यामाल इस समय टीम का सबसे बड़ा आकर्षण हैं। यूरोपीय चैंपियन बनने के बाद स्पेन का आत्मविश्वास काफी ऊंचा है और टीम अपने दूसरे विश्व कप खिताब की तलाश में मैदान पर उतरेगी। वहीं इंग्लैंड की उम्मीदें एक बार फिर हैरी केन पर टिकी हुई हैं। देश के सर्वाधिक गोल करने वाले खिलाड़ी के रूप में हैरी केन इंग्लैंड के सबसे भरोसेमंद खिलाड़ी बने हुए हैं। हालांकि इंग्लैंड को एक बेहद कठिन समूह में रखा गया है, जहां क्रोएशिया, घाना और पनामा जैसी टीमें चुनौती पेश करेंगी।

जर्मनी की स्थिति भी काफी दिलचस्प है। चार बार की विश्व चैंपियन टीम पिछले दो विश्व कप में समूह चरण से आगे नहीं बढ़ सकी थी। ऐसे में जूलियन नागेल्समान की टीम पर दबाव रहेगा। हालांकि फ्लोरियन विर्ट्ज, जमाल मुसियाला, जोशुआ किमिख और एंटोनियो रुडिगर जैसे खिलाड़ियों की मौजूदगी जर्मनी को मजबूत बनाती है।

लंबे इंतजार के बाद ट्रॉफी पर पीवी सिंधू की नजर खिताब जीतने का मौका

नई दिल्ली » दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधू मंगलवार से यहां शुरू होने वाले ऑस्ट्रेलिया ओपन सुपर 500 बैडमिंटन टूर्नामेंट में लंबे समय से चले आ रहे खिताब के सूखे को खत्म करने की कोशिश करेंगी, जबकि उभरते सितारे आयुष शेट्टी पुरुष एकल में भारतीय चुनौती की अगुवाई करेंगे। तीसरी वरीयता प्राप्त सिंधू2024 में सैयद मोदी इंटरनेशनल जीतने के बाद से अपना पहला बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर खिताब जीतने की कवायद में हैं। पूर्व विश्व चैंपियन का इस सत्र का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन जनवरी में मलेशिया ओपन के सेमीफाइनल में पहुंचना रहा है। सिंधू को यहां अनुकूल ड्रॉ मिला है। इस 30 वर्षीय खिलाड़ी का पहला मैच पेरू की इनेस लूसिया कैस्टिलो से होगा। इस मैच में जीत दर्ज करने के बाद उनका सामना हमवतन इशारानी बरुआ और चीन की हान कियान शी के बीच होने वाले मैच के विजेता से होगा। सिंधू पिछले सप्ताह इंडोनेशिया ओपन में राउंड-ऑफ-16 में पहुंची थी जहां उन्हें विश्व की नंबर एक खिलाड़ी आन से-यंग से हार का सामना करना पड़ा था।

मोनाको ग्रां प्री

19 साल के किमी एंटोनेली ने रचा इतिहास, 16 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा

एजेंसी » नई दिल्ली

इटली के युवा चालक किमी एंटोनेली ने मोनाको ग्रां प्री जीतकर इतिहास रच दिया है। महज 19 वर्ष और 9 महीने की उम्र में उन्होंने इस प्रतिष्ठित रेस को अपने नाम कर सबसे कम उम्र में मोनाको ग्रां प्री जीतने वाले चालक बनने का रिकॉर्ड बना दिया। गौरतलब है कि इससे पहले यह रिकॉर्ड सात बार के विश्व चैंपियन लुईस हैमिल्टन के नाम था। हैमिल्टन ने वर्ष 2008 में 23 वर्ष की उम्र में पहली बार मोनाको ग्रां प्री जीती थी। अब करीब 16 वर्षों बाद किमी एंटोनेली ने इस रिकॉर्ड को पीछे छोड़ते हुए मोटर रेसिंग की दुनिया में अपनी अलग पहचान बना ली।

मौजूद जानकारी के अनुसार रेस का 72वां संस्करण कई उतार-चढ़ाव से भरा रहा। किमी एंटोनेली ने शुरुआत से ही शानदार गति दिखाई और प्रतियोगियों पर लगातार दबाव बनाए रखा। रेस के दौरान उन्होंने इतनी बढ़त बना ली थी कि तीसरे स्थान पर चल रही गाड़ी तक को पीछे छोड़ चुके थे। एक समय वह दूसरे स्थान पर चल रहे लुईस हैमिल्टन से 30 सेकंड से भी अधिक आगे निकल गए थे।

हालांकि रेस के अंतिम चरण में परिस्थितियां अचानक बदल गईं। 68वें चक्कर पर ट्रैक की मरम्मत की जरूरत पड़ने के कारण मुकाबले को रोकना पड़ा। इससे पहले लांस स्ट्रोल की गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी, जिसके बाद सुरक्षा वाहन को ट्रैक पर उतारा गया। इसी दौरान फेरारी के चालक शार्ल लेक्लेर भी अंतिम मोड़ पर दीवार से टकरा गए।

कोर्ट पर लौटेगा रोजर फेडरर का जादू! यूएस ओपन में फैंस को मिलेगा खास तोहफा

एजेंसी » नई दिल्ली

पूर्व विश्व नंबर एक और पांच बार के यूएस ओपन चैंपियन रोजर फेडरर 25 अगस्त को यूएस ओपन में एक प्रदर्शनी मैच के लिए न्यूयॉर्क लौटेंगे, यह घोषणा यूनाइटेड स्टेट्स टेनिस एसोसिएशन (यूएसटीए) ने की है। 44 वर्षीय फेडरर, जो 2004 से 2008 तक लगातार पांच यूएस ओपन खिताब जीतने वाले एकमात्र खिलाड़ी (पुरुष या महिला) हैं, ने 2022 में संन्यास लेने से पहले 2019 में आखिरी बार इस ग्रैंड स्लैम में भाग लिया था। ओलंपिक्स डॉट कॉम के अनुसार, ₹रोजर फेडरर: एक दिग्गज की न्यूयॉर्क वापसी₹ शीर्षक वाले इस आयोजन में एंडी रॉडिक, जॉन मैकएनरो और आंद्रे अगासी भी भाग लेंगे। यह मैच आर्थर ऐश स्टेडियम में फैन वीक के दौरान होगा, जो 2026 यूएस ओपन से पहले आयोजित किया जा रहा है। यूएस ओपन मुख्य एकल ड्रॉ से एक सप्ताह पहले शुरू होता है। ओलंपिक्स डॉट कॉम के अनुसार, ₹रोजर फेडरर: एक दिग्गज की न्यूयॉर्क वापसी₹ शीर्षक वाले इस आयोजन में एंडी रॉडिक, जॉन मैकएनरो और आंद्रे अगासी भी भाग लेंगे। यह मैच आर्थर ऐश स्टेडियम में फैन वीक के दौरान होगा, जो 2026 यूएस ओपन से पहले आयोजित किया जा रहा है। यूएस ओपन मुख्य एकल ड्रॉ से एक सप्ताह पहले शुरू होता है। फेडरर ने Olympics.com से कहा कि मेरे करियर के कई अविस्मरणीय पल न्यूयॉर्क में घटे हैं, और आर्थर ऐश स्टेडियम मेरे लिए बहुत मायने रखता है।

टेनिस क्वीन सेरेना विलियम्स की धमाकेदार वापसी! म्बोको संग मचाएंगी धमाल

नई दिल्ली » टेनिस की दिग्गज खिलाड़ी सेरेना विलियम्स 8 से 14 जून तक लंदन के क्वींस क्लब में आयोजित होने वाली एचएसबीसी चैंपियनशिप में युगल प्रतियोगिता में 19 वर्षीय कनाडाई उभरती हुई स्टार विक्टोरिया म्बोको के साथ जोड़ी बनाएंगी, इस बात की घोषणा दोनों ने गुरुवार को की। 5 साल के आयु अंतर वाले ये दोनों खिलाड़ी ऐतिहासिक वेस्ट केंसिंग्टन स्थल पर घास के कोर्ट पर प्रतिस्पर्धा करेंगे। सोशल मीडिया पर इस किशोरी ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए लिखा कि इस हफ्ते सर्वकालिक महान खिलाड़ियों में से एक के साथ कोर्ट साझा करना मेरे लिए सम्मान की बात है। उनके साथ युगल मैच खेलने को लेकर मैं और भी उत्साहित हूं!

नॉर्वे चेस में लहराया तिरंगा, आर. प्रज्ञाननंदा बने चैंपियन, ऐसा करने वाले पहले भारतीय

एजेंसी » नई दिल्ली

भारतीय शतरंज के लिए यह समय बेहद गौरवपूर्ण माना जा रहा है। युवा ग्रैंडमास्टर आर. प्रज्ञानानंदा ने नॉर्वे में आयोजित प्रतिष्ठित शतरंज प्रतियोगिता जीतकर इतिहास रच दिया है। उनकी इस उपलब्धि के बाद तमिलनाडु सरकार ने उन्हें सम्मानित किया और राज्य की ओर से 50 लाख रुपये की नकद पुरस्कार राशि प्रदान की गई।

सोमवार को आयोजित एक विशेष समारोह में तमिलनाडु के मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय ने प्रज्ञानानंदा को सम्मानित किया। इस दौरान उन्हें स्मृति चिह्न भी भेंट किया गया। कार्यक्रम में राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी, खेल विभाग के प्रतिनिधि और प्रज्ञानानंदा के माता-पिता भी मौजूद रहे हैं।

बता दें कि प्रज्ञानानंदा ने ओस्लो में आयोजित नॉर्वे शतरंज प्रतियोगिता जीतकर यह उपलब्धि हासिल की है। गौरतलब है कि वह इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता का खिताब जीतने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बन गए हैं। शतरंज जगत में इस प्रतियोगिता को दुनिया की सबसे कठिन और प्रतिष्ठित स्पर्धाओं में गिना जाता है, जहां विश्व के शीर्ष खिलाड़ी हिस्सा लेते हैं। मौजूद जानकारी के अनुसार प्रज्ञानानंदा का यह सफर आसान नहीं रहा है। प्रतियोगिता के शुरुआती छह दौर के बाद वह अंक तालिका में छठे और अंतिम स्थान पर थे। इसी दौरान उनकी विश्व रैंकिंग भी गिरकर 16वें स्थान तक पहुंच गई थी। ऐसे में कई लोगों को उम्मीद नहीं थी कि वह खिताब की दौड़ में वापसी कर पाएंगे। हालांकि युवा भारतीय खिलाड़ी ने शानदार संघर्ष का परिचय दिया और लगातार चार मुकाबले जीतकर पूरे टूर्नामेंट की तस्वीर बदल दी है।

नया प्रोजेक्ट

गोवा से दुबई तक फैली हैं आलीशान संपत्तियां

तेजस्वी प्रकाश के पास है करोड़ों की दौलत...

टीवी इंडस्ट्री की लोकप्रिय अभिनेत्री तेजस्वी प्रकाश आज किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। अपनी दमदार अभिनय क्षमता और शानदार स्क्रीन प्रेजेंस के दम पर उन्होंने मनोरंजन जगत में खास पहचान बनाई है। छोटे पर्दे से अपने करियर की शुरुआत करने वाली तेजस्वी आज टीवी की सबसे चर्चित और सफल अभिनेत्रियों में गिनी जाती हैं। उनके जन्मदिन के मौके पर जानते हैं उनकी संपत्ति, लग्जरी लाइफस्टाइल और कमाई से जुड़ी खास बातें।

» **टीवी इंडस्ट्री में बनाई अलग पहचान...** तेजस्वी प्रकाश ने अपने करियर की शुरुआत साल 2012 में टीवी शो 2612 से की थी। हालांकि उन्हें असली लोकप्रियता Swaragini में निभाए गए किरदार से मिली। इसके बाद उन्होंने कई लोकप्रिय टीवी शो में काम किया और दर्शकों के बीच अपनी मजबूत पहचान बनाई।

» **करोड़ों में है नेटवर्थ...** मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, तेजस्वी प्रकाश की कुल संपत्ति करीब 25 करोड़ रुपये बताई जाती है। अभिनय के अलावा उनकी आय का बड़ा हिस्सा ब्रांड प्रमोशन, विज्ञापनों और अन्य व्यावसायिक गतिविधियों से आता है। बताया जाता है कि वह एक टीवी एपिसोड के लिए लाखों रुपये फीस लेती हैं, जबकि विज्ञापन और ब्रांड एंडोर्समेंट के लिए भी अच्छी-खासी रकम चार्ज करती हैं।

» **गोवा, दुबई और मुंबई में आलीशान संपत्तियां...** तेजस्वी प्रकाश ने पिछले कुछ वर्षों में रियल एस्टेट में भी निवेश किया है। उनके पास गोवा में एक खूबसूरत घर है। इसके अलावा उन्होंने अपने पार्टनर करण कुंद्रा के साथ दुबई में भी एक लग्जरी अपार्टमेंट खरीदा है।

» **बिजनेस और लग्जरी कारों की भी शौकीन...** अभिनय के साथ-साथ तेजस्वी बिजनेस की दुनिया में भी सक्रिय हैं। मुंबई के जुहू इलाके में उनका एक प्रीमियम ब्यूटी सैलून है, जो उनके प्रमुख निवेशों में शामिल है। कारों की बात करें तो उनके पास लग्जरी SUV समेत कई महंगी गाड़ियां हैं। उनकी कार कलेक्शन और लाइफस्टाइल अक्सर सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बनी रहती है।

तमिल सिनेमा के दिग्गज निर्देशक भारतीराजा का निधन, 85 की उम्र में दुनिया को कहा अलविदा

तमिल सिनेमा के दिग्गज फिल्मकार भारतीराजा का 85 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उनके निधन की खबर सामने आते ही तमिल फिल्म इंडस्ट्री और सिने प्रेमियों के बीच शोक की लहर दौड़ गई। लंबे समय से स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से जूझ रहे भारतीराजा ने बुधवार को चेन्नई में अंतिम सांस ली। उनके निधन को भारतीय सिनेमा के लिए एक बड़ी क्षति माना जा रहा है। भारतीराजा उन चुनिंदा निर्देशकों में शामिल थे जिन्होंने तमिल सिनेमा को नई पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ग्रामीण परिवेश और आम लोगों की कहानियों को बड़े पर्दे पर जीवंत तरीके से पेश करने के लिए उन्हें विशेष रूप से जाना जाता था।

पांचवें दिन भी करोड़ों में हुई कमाई...

बॉक्स ऑफिस पर डटी रही 'है जवानी तो इश्क होना है'

वरुण धवन की रोमांटिक कॉमेडी फिल्म 'है जवानी तो इश्क होना है' को रिलीज हुए पांच दिन पूरे हो चुके हैं। फिल्म को दर्शकों से मिला-जुला रिस्पॉन्स मिला है। पहले वीकेंड में अच्छी शुरुआत करने के बाद अब फिल्म वर्किंग डेज में अपनी रफ्तार बनाए रखने की कोशिश कर रही है। इस बीच पांचवें दिन के कलेक्शन के आंकड़े भी सामने आ गए हैं।

» **पांचवें दिन कितना रहा कलेक्शन...** रिपोर्ट के मुताबिक, फिल्म ने रिलीज के पांचवें दिन 3।50 करोड़ रुपये का नेट कलेक्शन किया है। खास बात यह है कि चौथे दिन भी फिल्म ने इतनी ही कमाई की थी। देशभर में 7,565 शोज के जरिए फिल्म ने यह कारोबार किया। इसके साथ ही भारत में फिल्म की कुल नेट कमाई 31 करोड़ रुपये तक पहुंच गई है। वहीं भारत में इसका कुल ग्रॉस कलेक्शन 36।92 करोड़ रुपये हो चुका है।

» **दुनिया भर में पहुंची इतनी कमाई...** फिल्म सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में भी कमाई कर रही है। पांचवें दिन इसने इंटरनेशनल मार्केट से 1 करोड़ रुपये का ग्रॉस कलेक्शन किया। इसके बाद विदेशों में फिल्म की कुल कमाई 10।50 करोड़ रुपये तक पहुंच गई है। वहीं भारत और विदेश की कमाई को मिलाकर फिल्म का कुल वर्ल्डवाइड ग्रॉस कलेक्शन 47।42 करोड़ रुपये हो गया है।

» **फिल्म की स्टारकास्ट...** डेविड धवन के निर्देशन में बनी यह फिल्म 5 जून 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। फिल्म में वरुण धवन, पूजा हेगड़े और मृणाल ठाकुर मुख्य भूमिका में हैं। इनके अलावा जिमी शेरगिल, मौनी रॉय, मनीष पॉल, कुब्रा सैत, मनोज पाहवा, राकेश बेदी, चंकी पांडे और अली असगर भी अहम किरदारों में नजर आ रहे हैं।

कई फिल्मों के बीच बनी हुई है मौजूदगी... बॉक्स ऑफिस पर इस समय कई बड़ी फिल्में चल रही हैं। राम चरण की 'पेड्डी', बॉबी देओल की 'बंदर' और सूर्या की करुप्पु, मोहनलाल की दृश्यम के बीच भी 'है जवानी तो इश्क होना है' दर्शकों का ध्यान खींचने में सफल रही है। यही वजह है कि फिल्म लगातार टिकट खिड़की पर अपनी मौजूदगी बनाए हुए है।

सपना चौधरी की जिंदगी में मचा बवाल

पति के खिलाफ कोर्ट पहुंचीं तो मिला बड़ा सहारा

हरियाणवी डांसर और गायिका सपना चौधरी इन दिनों अपनी निजी जिंदगी को लेकर चर्चा में हैं। हाल ही में सामने आए एक कानूनी मामले में दिल्ली की एक महिला अदालत ने उन्हें अंतरिम सुरक्षा प्रदान की है। अदालत ने उनके पति यशवीर साहू (वीर साहू) के खिलाफ कुछ अस्थायी प्रतिबंध लगाने का आदेश दिया है। यह फैसला घरेलू विवाद से जुड़ी याचिका पर सुनवाई के दौरान दिया गया।

» **अदालत ने जारी किए अंतरिम निर्देश...** मामले की सुनवाई के दौरान अदालत ने अगली सुनवाई तक दोनों पक्षों के बीच दूरी बनाए रखने के निर्देश दिए हैं। आदेश के अनुसार, पति को सपना चौधरी से सीधे संपर्क करने, उनके निवास स्थान, कार्यस्थल या सार्वजनिक कार्यक्रमों में जाने से रोका गया है। अदालत का उद्देश्य मामले की निष्पक्ष सुनवाई तक दोनों पक्षों की सुरक्षा और शांति सुनिश्चित करना है।

» **क्या है पूरा मामला?** दायर याचिका में सपना चौधरी ने वैवाहिक जीवन से जुड़ी कई परेशानियों का जिक्र किया है। उन्होंने आरोप लगाया है कि शादी के बाद उन्हें मानसिक और शारीरिक प्रताड़ना का सामना करना पड़ा। याचिका के अनुसार, हालात ऐसे बने कि उन्हें अपने बच्चों के साथ ससुराल छोड़कर मायके में रहना पड़ा। उन्होंने अदालत के समक्ष यह भी आशंका जताई कि भविष्य में उनकी सुरक्षा को खतरा हो सकता है।

क्योंकि सास भी कभी बहू थी

करण की एंट्री के बाद फूटा नंदिनी का गुस्सा, खोली पोल

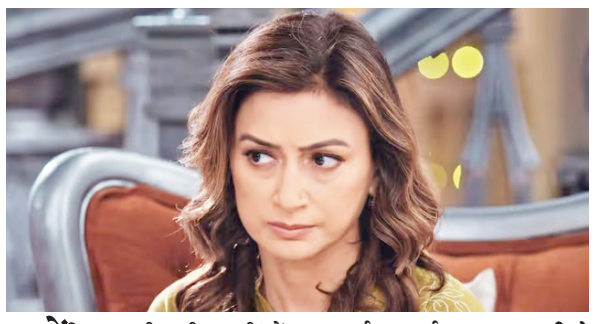

'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' में एक बार फिर परिवार के रिश्तों में नया मोड़ देखने को मिला। एपिसोड की शुरुआत तुलसी और वैष्णवी की बातचीत से होती है। तुलसी, वैष्णवी को बताती हैं कि पार्थ बचपन से बहुत आराम और प्यार में पला-बढ़ा है। उसे कभी किसी चीज के लिए ज्यादा संघर्ष नहीं करना पड़ा, इसलिए वह मुश्किल हालात को संभालना नहीं सीख पाया। तुलसी यह भी मानती हैं कि उन्होंने पार्थ को रिश्तों और भावनाओं को सही तरीके से समझना नहीं सिखाया। तुलसी की बात सुनने के बाद वैष्णवी पार्थ से बात करती है और दोनों के बीच की नाराजगी कम हो जाती है। दोनों साथ में केक भी काटते हैं, लेकिन पार्थ अभी भी अंदर से परेशान रहता है।

» **पार्थ का दर्द सुनकर तुलसी ने दिया साथ...** इसके बाद तुलसी पार्थ के कमरे में जाती हैं। वहां पार्थ अपनी परेशानी उनके सामने रखता है। वह कहता है कि रिओ को पावर ऑफ अटॉर्नी मिलने से नंदिनी बहुत दुखी हैं। पार्थ खुद को भी कमजोर महसूस करता है। तब तुलसी उसे समझाती हैं कि गुस्सा किसी समस्या का हल नहीं है। वह उसे धैर्य और समझदारी से काम लेने की सलाह देती हैं। तुलसी की बातें सुनकर पार्थ थोड़ा शांत हो जाता है।

» **करण के आते ही शुरू हुई नई बहस...** कुछ देर बाद करण घर पहुंचता है। परिवार के कई सदस्य उसे देखकर खुश हो जाते हैं। इस बीच पावर ऑफ अटॉर्नी को लेकर फिर चर्चा शुरू हो जाती है।

केजीएफ स्टार यश की नई फिल्म क्यों हो रही है लेट

क्या यश की "टॉक्सिक" का होगा रीशूट? मेकर्स ने तोड़ी चुप्पी, बताई सच्चाई

केजीएफ' स्टार यश की अपकमिंग फिल्म 'टॉक्सिक' इन दिनों सुर्खियों में है। हाल ही में ऐसी खबरें सामने आई थीं कि यश फिल्म की शूटिंग से खुश नहीं हैं और इसके कुछ हिस्सों को दोबारा शूट किया जाएगा। दावा किया जा रहा था कि रीशूट पर 100 दिन और करीब 40 करोड़ रुपये खर्च होंगे। हालांकि, अब मेकर्स ने इन सभी खबरों को पूरी तरह गलत और बेबुनियाद बताया है।

» **मेकर्स ने क्या कहा?** रिपोर्ट के मुताबिक, फिल्म की टीम के एक बड़े अधिकारी ने बताया कि फिल्म को दोबारा शूट करने की कोई प्लानिंग नहीं है। फिल्म की शूटिंग बिल्कुल सही तरीके से और तय प्लान के मुताबिक चल रही है। किसी भी हिस्से को दोबारा नहीं बदला जा रहा है। इस बयान के बाद यश के फैंस ने राहत की सांस ली है कि उनकी पसंदीदा फिल्म की शूटिंग में कोई गड़बड़ी नहीं हुई है।

» **क्यों उड़ी थीं ये झूठी खबरें?** दरअसल, इस फिल्म की रिलीज डेट कई बार बदल चुकी है, इसीलिए लोगों ने मनगढ़ंत कहानियां बनानी शुरू कर दीं। पहले यह फिल्म 19 मार्च 2026 को आने वाली थी। लेकिन दुनिया के कुछ देशों (मिडल ईस्ट) में चल रहे तनाव और लड़ाइयों की वजह से इसके मेकर्स ने इसे आगे बढ़ाकर 4 जून करने का फैसला किया। अब 4 जून की तारीख भी आगे बढ़ चुकी है और मेकर्स ने अभी तक नई डेट की अनाउंसमेंट नहीं की है।

» **रणवीर सिंह की फिल्म को हुआ फायदा...** जब यश की 'टॉक्सिक' की तारीख आगे बढ़ी, तो मार्च के महीने में बॉलीवुड स्टार रणवीर सिंह की फिल्म 'धुरंधर 2' अकेले रिलीज हुई। सिनेमाघरों में कोई दूसरी बड़ी फिल्म न होने की वजह से रणवीर सिंह की फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर छप्पर फाड़ कमाई की और ब्लॉकबस्टर साबित हुई।

» **फिल्म में कौन-कौन से स्टार्स हैं?** 'केजीएफः चैप्टर-2' जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्म देने के बाद यह यश की अगली बड़ी फिल्म है, इसलिए लोग इसका बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। इस फिल्म का डायरेक्शन गीतू मोहनदास कर रही हैं। फिल्म में यश के साथ कियारा आडवाणी, नयनतारा, हुमा कुरैशी, तारा सुतारिया और रुक्मिणी वसंत जैसे बड़े कलाकार नजर आने वाले हैं। खास बात यह है कि यश इस फिल्म में सिर्फ एक्टिंग ही नहीं कर रहे हैं, बल्कि उन्होंने इसकी कहानी भी लिखी है और वे इसके प्रोड्यूसर भी हैं।

बॉलीवुड न्यूज

'भारत भाग्य विधाता' का फर्स्ट रिव्यू आया सामने

» कंगना रनौत की अपकमिंग फिल्म 'भारत भाग्य विधाता' का फर्स्ट रिव्यू सामने आ गया है। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने मोस्ट अवेटेड मूवी देखी और अपनी राय शेयर की। कहानी से कनेक्ट करते हुए सीएम ने इसे शानदार बताया और इसमें दिखाए गए साहस, त्याग और इंसानियत की तारीफ की। उन्होंने दिल्ली में इसे टैक्स फ्री करने की अनाउंसमेंट भी की। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कंगना रनौत की भारत भाग्य विधाना देखने के बाद मीडिया से बात की और कहा, फिल्म शानदार है इसकी तारीफ करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है इसमें भारतीय इंसानियत की वो झलक देखने को मिली, जो अब तक हमसे छिपी हुई थी। हमने देखा कि कैसे 15 नर्सों ने उस रात 400 मरीजों की जान बचाई, जिससे यह साबित हुआ कि हिम्मत किसी वर्दी की मोहताज नहीं होती, हिम्मत इंसान के चरित्र की एक अहम खूबी है। कंगना ने उस रात हमारी नर्सों की ओर से दिखाई गई हिम्मत को बहुत बेहतरीन ढंग से पर्दे पर उतारा है मैं देश और दुनिया भर के लोगों से अपील करती हूं कि वे यह फिल्म जरूर देखें मेरी यह भी इच्छा है कि दिल्ली सरकार की ओर से हम इस मूवी को टैक्स-फ्री करे, ताकि हर बच्चा, हर युवा और हर परिवार इसे देखने आ सके।"

10 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी 'धमाल-4'

» सरप्राइज किसे पसंद नहीं होते और जब सरप्राइज के साथ कॉमेडी, मस्ती और पूरा पागलपन जुड़ जाए तो एंटरटेनमेंट कई गुना बढ़ जाता है। दर्शकों के बीच लंबे समय से चर्चा में बनी हुई फिल्म 'धमाल 4' का रिलीज डेट फाइनली रिवील हो गया है। जी हां मोस्ट अवेटेड फ्रेंचाइजी का चौथा पार्ट 10 जुलाई को सिनेमाघरों में दस्तक देगा। अजय देवगन ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक फोटो शेयर किया। जिसमें धमाल 4 का जबरदस्त लोगो दिखाई दे रहा है। इसी के साथ लिखा है, "कॉमेडी ड्रामा 10 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।" धमाल फ्रेंचाइजी हमेशा से अपने अनोखे कॉमेडी, अजीबोगरीब परिस्थितियों और यादगार किरदारों के लिए जानी जाती रही है। चौथे पार्ट में स्टार्स खजाने की तलाश में निकले हैं। फिल्म में कॉमेडी का तड़का लगाने के लिए एक शानदार स्टारकास्ट को चुना गया है। जिसमें अजय देवगन, अरशद वारसी, रितेश देशमुख, जावेद जाफरी और संजय मिश्रा शामिल है। इनके अलावा ईशा गुप्ता, संजीदा शेख, अंजलि आनंद, उपेंद्र लिमये, विजय पाटकर और रवि किशन भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे।

शिल्पा शेट्टी के पति राज कुंद्रा की हो रही तारीफ

» बॉलीवुड एक्ट्रेस शिल्पा शेट्टी के पति और जाने-माने बिजनेसमैन राज कुंद्रा सोशल मीडिया पर अक्सर चर्चा में रहते हैं। लेकिन इस बार उन्होंने मुंबई एयरपोर्ट पर कुछ ऐसा किया है, जिसकी वजह से हर तरफ उनकी जमकर तारीफ हो रही है। एयरपोर्ट पर काम करने वाली एक महिला कर्मचारी ने खुद इस घटना की जानकारी दी है और मुसीबत के समय उनका साथ देने के लिए राज कुंद्रा का शुक्रिया अदा किया है। यह पूरी घटना मुंबई एयरपोर्ट की है। वहां कलावती जाधव नाम की एक महिला स्टाफ ड्यूटी पर थीं। तभी अचानक एक यात्री किसी बात पर उन पर गुस्सा हो गया। वह यात्री सबके सामने चिल्लाने लगा और महिला कर्मचारी को डराने-धमकाने लगा। वहां मौजूद बहुत से लोग चुपचाप तमाशा देख रहे थे। महिला कर्मचारी उस समय खुद को बहुत अकेला और लाचार महसूस कर रही थी। महिला स्टाफ के साथ हो रहा यह गलत बर्ताव राज कुंद्रा से देखा नहीं गया। वे तुरंत आगे आए और उन्होंने उस बदतमीजी करने वाले यात्री को रोका। राज कुंद्रा ने बहुत सख्ती से उस शख्स से कहा कि इस तरह का बर्ताव बिल्कुल गलत है और वह किसी महिला से इस लहजे में बात नहीं कर सकता।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक कलासो देवी के द्वारा सूचना प्रिंटर, 33 एस मॉडल टाउन मार्केट हिसार, हरियाणा से मुद्रित करवाकर बाला जी सेनेटरी स्टोर, करनाल रोड, डिफेंस कॉलोनी, गली नंबर-8, रिलायंस स्मार्ट पॉइंट के पास, कैथल से प्रकाशित। संपादक कलासो देवी। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र कैथल होगा। RNI No. HRHIN/26/A1127, मोबाइल नंबरः 9499422208, Email: Info@hindustanekta.com